अर्शज्योतिः

संस्कृत विभागः

यथा क्रियते
तथा भुज्यते

"श्रद्धावान् लभते
ज्ञानम्"

विद्वान सर्वत्र
पूज्यते

"लोभः पापस्य
कारणम्"

भरत मुनि ने नाट्य शास्त्र लिखा। इनका समय विवादास्पद हैं। इन्हें 500 ई.पू. 100 ई. सन् के बीच किसी समय का माना जाता है। भरत बड़े प्रतिभाशाली थे। इतना स्पष्ट है कि भरतमुनि रचित नाट्यशास्त्र से परिचय था। इनका 'नाट्यशास्त्र' भारतीय नाट्य और काव्यशास्त्र का आदिग्रन्थ है। इसमें नाट्यशास्त्र, संगीत-शास्त्र, छंदशास्त्र, अलंकार, रस आदि सभी का सांगोपांग प्रतिपादन किया गया है। 'भारतीय नाट्यशास्त्र' अपने विषय का आधारभूत ग्रन्थ माना जाता है। कहा गया है कि भरतमुनि रचित प्रथम नाटक का अभिनय, जिसका कथानक 'देवासुर संग्राम' था, देवों की विजय के बाद इन्द्र की सभा में हुआ था। विद्वानों का मत है कि भरतमुनि रचित पूरा नाट्यशास्त्र अब उपलब्ध नहीं है। जिस रूप में वह उपलब्ध है, उसमें लोग काफ़ी क्षेपक बताते हैं

वेदों के अन्तिम भाग या उच्चतम दर्शन को वेदान्त या उपनिषद् कहा जाता है.

वेदों के अन्तिम भाग या उच्चतम दर्शन को वेदान्त या उपनिषद् कहा जाता है. अब वेदान्त शब्द का प्रयोग उस विशेष दर्शन के लिए भी होता है जो उपनिषदों पर आधारित है. शंकर 'उपनिषद्' शब्द की व्युत्पत्ति 'सद्' धातु से मानते हैं, जिसका अर्थ है मुक्त करना, पहुँचना या नष्ट करना. यह एक विशेष्य है जिसमें 'उप' और 'नि' उपसर्ग और क्विप् प्रत्यय लगे हैं. इसके अनुसार उपनिषद् का अर्थ होता है ब्रह्मज्ञान, जिसके द्वारा अज्ञान से मुक्ति मिलती है. दूसरे अर्थ में 'उप' (समीप) 'नि' (अच्छी तरह) और 'सद्' (बैठना) अर्थात् परमात्मा के समीप अच्छी तरह बैठाना ही उपनिषद् का ध्येय है. जिन ग्रन्थों में ब्रह्मज्ञान की चर्चा रहती है वे उपनिषद् कहलाते हैं. उपनिषदों में आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि एवं दार्शनिक तर्क प्रणाली दोनों के दर्शन होते हैं. श्वेताश्वतरोपनिषद् के अनुसार परमेश्वर वेदों के गुह्य भाग उपनिषदों में निहित है (तद्वेद गुह्योपनिषत्सु गूढं). उपनिषद् ऐसा साहित्य है जो आदि काल से विकसित हो रहा है. भारतीय परम्परा में उपनिषदों की संख्या एक सौ आठ मानी गयी है. शंकराचार्य ने ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहद् आरण्यक और श्वेताश्वतर- इन ग्यारह उपनिषदों का भाष्य किया है और ये ही सर्वसुलभ हैं.

वेद का एक भाग होने से उपनिषदों का सम्बन्ध श्रुति या प्रकट हुए साहित्य से है. ये सनातन कालातीत हैं. अन्तःप्रेरित ऋषि यह घोषणा करते हैं कि जिस ज्ञान को वे प्रदान कर रहे हैं उसका उन्होंने स्वयं आविष्कार नहीं किया है. वह उनके आगे बिना उनके प्रयत्न के प्रकट हुआ है (पुरुष प्रयत्नं विना प्रकटीभूत). उपनिषद् प्रतीक शैली का प्रयोग करते हुए, दिव्य दर्शन को हमारे ऊपर छोड़ा गया ईश्वर का निश्वास कहते हैं

(मुण्डक 2-1-6). श्वेताश्वतर उपनिषद् कहती है कि ऋषि श्वेताश्वतर ने अपने तप के प्रभाव और ईश्वर की कृपा से सत्य का दर्शन किया. उपनिषदें व्यवस्थित चिन्तन से अधिक आत्मिक आलोक की साधन हैं. इनमें हमें आध्यात्मिक जीवन का वर्णन मिलता है, जो भूत; वर्तमान और भविष्य में सदा एक सा है. ब्रह्मसूत्र उपनिषदों की शिक्षा का संक्षिप्त सार है. वेदान्त के महान आचार्यों ने इस ग्रन्थ पर भाष्य रचकर उनसे अपने-अपने विशिष्ट मत विकसित किये हैं.

कालिदास

कश्चित कांताविरहगुरुणा स्वाधिकारात् प्रमतः
शापेनास्तंगमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः !
यक्षश्चक्रे जनकतनया स्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छाया तरुषु वसितिं रामगिर्याश्रमेषु !!

कालिदास संस्कृत भाषा के महान कवि और नाटककार थे।उन्होंने भारत की पौराणिक कथाओं और दर्शन को आधार बनाकर रचनाएं की और उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन और दर्शन के विविध रूप और मूल तत्व निरूपित हैं। कालिदास अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण राष्ट्र की समग्र राष्ट्रीय चेतना को स्वर देने वाले कवि माने जाते हैं और कुछ विद्वान उन्हें राष्ट्रीय कवि का स्थान तक देते हैं।

अभिज्ञानशाकुंतलम् कालिदास की सबसे प्रसिद्ध रचना है। यह नाटक कुछ उन भारतीय साहित्यिक कृतियों में से है जिनका सबसे पहले यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद हुआ था। यह पूरे विश्व साहित्य में अग्रगण्य रचना मानी जाती है। मेघदूतम् कालिदास की सर्वश्रेष्ठ रचना है जिसमें कवि की कल्पनाशक्ति और अभिव्यंजनावादभावाभिव्यन्जना शक्ति अपने सर्वोत्कृष्ट स्तर पर है और प्रकृति के मानवीकरण का अद्भुत रखंडकाव्ये से खंडकाव्य में दिखता है।

कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं और तदनुरूप वे अपनी अलंकार युक्त किन्तु सरल और मधुर भाषा के लिये विशेष रूप से जाने जाते हैं।

उनके प्रकृति वर्णन अद्वितीय हैं और विशेष रूप से अपनी उपमाओं के लिये जाने जाते हैं।[5] साहित्य में औदार्य गुण के प्रति कालिदास का विशेष प्रेम है और उन्होंने अपने शृंगार रस प्रधान साहित्य में भी आदर्शवादी परंपरा और नैतिक मूल्यों का समुचित ध्यान रखा है।

कालिदास के परवर्ती कवि बाणभट्ट ने उनकी सूक्तियों की विशेष रूप से प्रशंसा की है।

प्रार्थना !!

गायत्री मंत्र...

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

जो सभी जीवों को प्राण देता है, सभी दुखों को दूर करता है तथा नाना प्रकार के सुखों को देने वाला है, हम सब उस श्रेष्ठ, दीप्तिमान देवता सूर्य का ध्यान करें (जिससे) कि वह हमारी बुद्धि को प्रेरित करता रहे ॥

श्लोक...

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

गुरु ब्रह्मा हैं, गुरु विष्णु हैं, गुरु महेश्वर देव (शिव) हैं। गुरु (ही) साक्षात् परब्रह्म हैं, ऐसे उन गुरुदेव को नमस्कार हो।

अस्माकं संस्कृतपरिवारस्य नूतन- अन्तर्जालपुटे
भवतां सर्वेषां हार्दिकं स्वागतम्।

प्रार्थना

नमो नमो f म्ब ! देववाणि देवि कामपूरणी!
नमो नमो f म्ब ! पाहि मां पुनिहि कामरूपिणि !
यागाधूमपाविते ! तपोवने निनादिनि !
पावनापगाप्रवाहमञ्चुनादयोगिनि!
योगाधूतपाप्मनां मुखे f मले विलासिनि!
भोगसुन्दरापवर्गदायिनि सनातिनि !
चारुशब्दसुन्दरास्यवल्गुलास्यमोहिनि!
ब्रह्मकर्मचिन्तया निगूढतत्वदर्शिनि !
वेदलोकशब्दसम्पदूर्जिते मनोन्मणि !
भारतीयसंस्कृतेरुदारसारवाहिनि !

वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

शिक्षक दिवस के पावन अवसर पर आप सभी को
शुभकामनाएं और सभी शिक्षकों को प्रणाम

गुरु ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देव महेश्वर:।
गुरु साक्षात्परब्रह्म तस्मैश्री गुरुवे नम:॥

गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है और गुरु
ही भगवान शंकर है, गुरु ही साक्षात परब्रह्म है,
ऐसे गुरु को मैं प्रणाम करता हूं।

सुभाषितानि श्लोकाः

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

नारिकेल समाकाराः दृश्यन्ते हि सुहृज्जनाः।
अन्ये बदरिकाकाराः बहिरेव मनोहराः॥

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति।
व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति संचयात्॥

भर्तृहरि पद्यानि

साहित्य-संगीत-कला-विहीनः
साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः
तद्भागधेयं परमं पशूनाम ॥

येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥

सदाचारः

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्॥

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रियाः॥

सर्वलक्षणहीनोऽपि यः सदाचारवान् नरः।
श्रद्दधानोऽनसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति॥

परित्राणाया साधूनां,
विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय
संभवामि युगे-युगे॥

गीता-सार

यदा-यदा हि धर्मस्य
ग्लानिर्भवति भारत:।
अभ्युत्थानम अधर्मस्य
तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

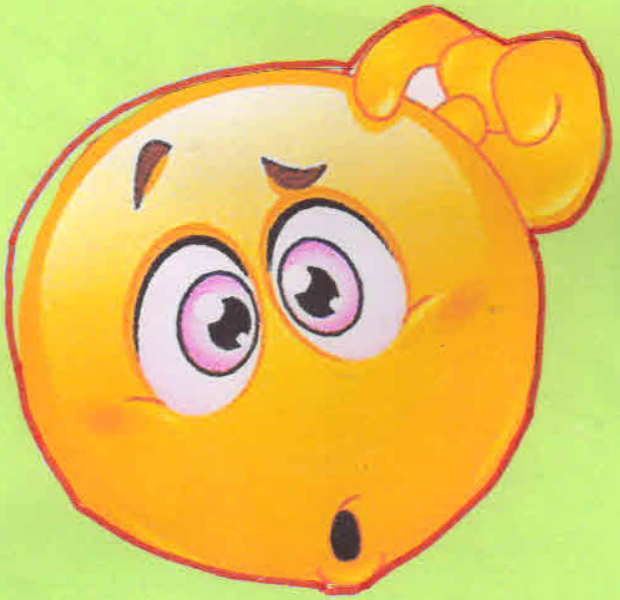

अद्भुत स्वप्न ?

राजीवस्य अदभुतं स्वपनम्
सिंहो वदति म्याऊँ-म्याऊँ
हस्ती धावति यथा चित्रकः
सर्पः वदति भौं-भौं भाऊँ ।
भल्लूकः दुर्बलः तथा यत् ।
यथा चमरपुच्छा संजातः ।
मूषकभीता धावति मार्जारी ।
शशकः धावति शृंगयुतः